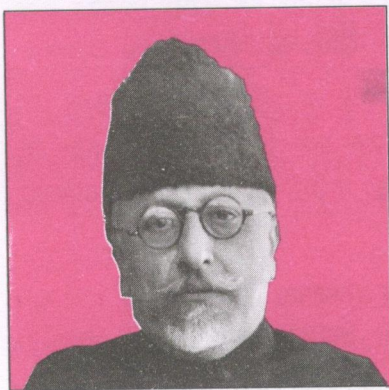


21. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

डॉ० राममूर्ति वासुदेव 'प्रशांत'



मौलाना अबुल कलाम आज़ाद उच्चकोटि के राष्ट्रभक्त नेता थे। उन्होंने भारत के मुसलमानों को कभी भी एक भिन्न राष्ट्र के रूप में नहीं माना। वे तो राजनैतिक समस्याओं को राजनैतिक दृष्टि से तथा धार्मिक क्रियाकलापों को धर्म की दृष्टि से देखने के पक्षधर थे। वस्तुतः वे एक सच्चे राष्ट्रवादी नेता थे। उन्होंने अल्पायु में ही देश के नवजागरण में भाग लेना आरंभ कर दिया था। उन्होंने अपनी लेखनी तथा वाणी से सभी वर्गों के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। यही नहीं, स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भी उन्होंने देश को

धर्मनिरपेक्षता के आधार पर संगठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मौलाना आज़ाद के पूर्वज बादशाह बाबर के समय में हेरात से भारत आ गए थे। वे पहले-पहल आगरा में रहने लगे और बाद में देहली आ गए। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद देश के दमनकारी वातावरण को देखते हुए अबुल कलाम के पिता खैर-उद्-दीन भारत से मक्का जा बसे। अबुल कलाम का जन्म सन् 1888 में मक्का में ही हुआ। वहां उन के पिता मौलाना खैर-उद्-दीन इस्लामी जगत् में काफी प्रसिद्ध हो गए। फिर सन् 1890 में वे पूरे परिवार के साथ कोलकाता आ बसे। वे धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। जीवन की प्राचीन पद्धतियों में उनका बहुत विश्वास था। पाश्चात्य शिक्षा को वे बच्चों के लिए हानिकारक समझते थे। अपने बेटे अबुल कलाम को भी वे आधुनिक ढंग की शिक्षा देने के पक्ष में नहीं थे। इसलिए उन्होंने उसे पारंपरिक ढंग की शिक्षा देनी प्रारंभ कर दी और घर पर ही विभिन्न विषयों के अध्यापक रख दिए। इस तरह अबुल कलाम ने फारसी, अरबी, दर्शनशास्त्र, गणित तथा तर्कशास्त्र में प्रवीणता प्राप्त कर ली। यही नहीं, उन्होंने इस्लामी धर्मशास्त्र का भी गहनता से अध्ययन किया। अबुल कलाम बहुत परिश्रमी और मेधावी विद्यार्थी थे। उन्होंने 16 वर्ष की आयु में ही पारंपरिक शिक्षा का अध्ययन समाप्त कर लिया जिसे प्रायः अन्य विद्यार्थी 25 वर्ष की आयु तक ही पूरा करते थे।

इसी दौरान अबुल कलाम को सर सैयद अहमद खाँ के लेख पढ़ने का अवसर मिला। आधुनिक शिक्षा पर सैयद अहमद खाँ के विचारों ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। उन्होंने अनुभव किया कि आज के युग में पुराने ढंग की शिक्षा इतनी उपयोगी नहीं है। आज तो आधुनिक विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि का ज्ञान ही मनुष्य को शिक्षित बनाता है। इन विषयों की पुस्तकों के अध्ययन के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी आवश्यक है। अतः अंग्रेजी का गहन अध्ययन भी किया।

उन के लिए यह एक मानसिक तनाव का काल था। अपने परिवार के धार्मिक परम्पराओं का पक्षपाती होने पर भी उन्होंने पारंपरिक बन्धनों को तोड़ा और इस तरह नाम के साथ 'आज़ाद' लगा लिया। अब वे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद बन गए थे।

यह भारत के राष्ट्रीय पुनर्जागरण का काल था। बंगाल क्रान्तिकारी आन्दोलनों का प्रमुख केन्द्र बन गया था। अंग्रेज़ सरकार हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भेदभाव पैदा करने का प्रयत्न कर रही थी। इसी उद्देश्य से लार्ड कर्ज़न ने 1905 में बंगाल के दो टुकड़े कर दिए और इस के हिन्दु और मुसलमान बहुमत वाले दो प्रान्त बना दिए। इस से क्रान्ति की लहर और भी तीव्र हो उठी। मौलाना आज़ाद भी क्रान्तिकारी वर्ग के एक सदस्य बन गए। आज़ाद के सुझाव पर ही क्रान्तिकारियों का कार्यक्षेत्र बंगाल और बिहार से बढ़ कर भारत के दूसरे हिस्सों तक फैल गया।

इसी बीच सन् 1908 के बाद मौलाना आज़ाद ने इराक, मिस्र, सीरिया, तुर्की और फ्रांस की यात्रा भी की। वे वहां अरबी और तुर्की क्रान्तिकारियों से मिले जो इस बात से बड़े हैरान हुए कि भारतीय मुसलमान राष्ट्रवादी मांगों के विरुद्ध है। आज़ाद का विचार था कि संकीर्ण कट्टरता से घृणा और धर्मान्धता ही फैलती है। वे इस्लाम धर्म को सेवा और त्याग के उपकरण के रूप में परिभाषित करने वाले व्यक्ति थे। उन के अनुसार धर्म और जाति का राजनैतिक उद्देश्यों के लिए शोषण बिल्कुल अनुचित था।

स्वदेश लौटने पर मौलाना आज़ाद ने अपने राष्ट्रवादी विचारों का भारतवासियों और विशेषतः मुसलमानों में प्रचार करने का निश्चय किया। इस दृष्टि से उन्होंने कोलकाता में एक प्रैस की स्थापना की और सन् 1912 में उर्दू में एक साप्ताहिक पत्रिका 'अलहिलाल' निकाली। मुसलमानों का नेतृत्व उस समय अलीगढ़ पार्टी के हाथों में था जो कि सर सैयद अहमद खाँ की नीतियों की समर्थक थी। उस के अनुसार तो मुसलमानों को अंग्रेजी राज के समर्थक होना चाहिए और स्वतन्त्रता आन्दोलन से अलग रहना चाहिए। 'अलहिलाल' की लोकप्रियता को देख कर उन लोगों ने इस का विरोध किया। अंग्रेजी सरकार भी इस पत्रिका की प्रसिद्धि पर बहुत खिन्न थी। अतः इसे बंद करवाने के कई प्रयास किए गए। इस बीच प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के आरंभ होने के बाद 1915 में भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत इस पत्रिका को ज़ब्त कर लिया गया परन्तु आज़ाद इससे हतोत्साहित नहीं हुए। उन्होंने पाँच माह के बाद 'अलब्लाक' नाम की एक दूसरी पत्रिका प्रकाशित करनी आरंभ कर दी। इससे अंग्रेज सरकार ने कुपित हो कर अप्रैल 1916 में मौलाना आज़ाद को कोलकाता से निष्कासित कर दिया। पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और मुम्बई में तो पहले ही उनके प्रवेश पर रोक थी। अतः वे रांची आ गए जहां उन्हें छः माह के बाद हिरासत में ले लिया गया। प्रथम जनवरी, 1920 को उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया।

इसी दौरान जनवरी, 1920 में अंग्रेज़ों ने तुर्की के खलीफा से दुर्व्यवहार किया। इस के खिलाफ गांधी जी तथा अन्य नेताओं ने खिलाफत आन्दोलन चला कर उसे राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप दे दिया। जिस में आज़ाद ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। दिसम्बर, 1920 में कांग्रेस के

नागपुर में हुए वार्षिक अधिवेशन में आज़ाद सहित सभी नेताओं ने असहयोग को अपनी स्वीकृति दे दी, किन्तु जिन्नाह ने कांग्रेस छोड़ दी। अंग्रेज़ी सरकार ने अन्य नेताओं के साथ मौलाना आज़ाद को भी जेल में बंद कर दिया। प्रथम जनवरी, 1923 को आज़ाद जेल से रिहा हुए। सितम्बर, 1923 के कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में वे उस के अध्यक्ष चुने गए। वे इस पद को प्राप्त करने वाले सब से कम आयु के व्यक्ति थे। सन् 1930 में गांधी जी द्वारा चलाये गए नमक सत्याग्रह में वे पुनः कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये।

सन् 1935 के 'भारत सरकार कानून' के अन्तर्गत प्रथम प्रान्तीय सरकारों के चुनाव हुए जिसमें कांग्रेस को आशातीत सफलता मिली। कांग्रेस द्वारा प्रान्तीय सरकारों के निरीक्षण के लिए जिस संसदीय बोर्ड का गठन हुआ उस में सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के अलावा मौलाना आज़ाद को भी रखा गया। आज़ाद को बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, सिन्धु और फ्रंटीयर के प्रान्तों का प्रभारी बनाया गया। सन 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो जाने के बाद मौलाना आज़ाद को व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान हिरासत में ले लिया गया, किन्तु 1941 में वे रिहा हो गए। सन् 1942 में गांधी जी द्वारा संचालित भारत छोड़ो आन्दोलन के समय मौलाना आज़ाद ही कांग्रेस के अध्यक्ष थे। किन्तु 8 अगस्त, 1942 को वे अन्य शीर्षस्थ नेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। जून, 1945 में वे रिहा हो गए। इस के बाद अंग्रेज़ों द्वारा देश की बागडोर भारत को सौंपने के बारे में हुई वार्ताओं में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। अन्त में 15 अगस्त, 1947 को जब देश स्वतन्त्र हुआ, तो प्रथम केन्द्रीय सरकार में मौलाना आज़ाद शिक्षा मन्त्री बने। वे जीवन-पर्यन्त इस पद पर बने रहे। 22 फरवरी, 1958 को उन का निधन हो गया।

मौलाना आज़ाद हिन्दु-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वे देशसेवा और इस्लाम धर्म की सेवा दोनों को एक दूसरे का पूरक मानते थे। वे वस्तुतः भारत की मिली-जुली संस्कृति के उत्कृष्ट उदाहरण थे। वे आजीवन विषैली साम्प्रदायिकता का विरोध करने के लिए चट्टान की तरह अडिग रहे।

* अभ्यास *

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक पंक्ति में उत्तर दीजिए :-

- (क) मौलाना आज़ाद किस प्रकार के नेता थे ?
- (ख) उन का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
- (ग) उन के पिता किस प्रकार की शिक्षा के पक्ष में थे ?
- (घ) मौलाना आज़ाद ने किन-किन देशों की यात्रा की ?
- (ङ) वे कब-कब कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए ?

2. मौलाना आज़ाद की शिक्षा-दीक्षा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. मौलाना आज़ाद और अन्य मुस्लिम नेताओं में तुलना कीजिए।
4. मौलाना आज़ाद की जीवनी का संक्षेप में परिचय कीजिए।